भजन

तर्ज–है इसी में प्यार की आबरू

कर न सकेंगे अदा कभी,महबूब की मेहरबानियां
बढ़ती ही जाये हर घड़ी,बेशुमार ये निगेहबानियां

1–तेरी साहेबी बेमिसाल है,तेरा इश्क भी बेहिसाब है
बख्शा जो हमको हजूर ने,ये उनकी ही कद्रदानियां

2– तेरी हर रज़ा स्वीकार है,तुम हो मेरे एतबार है
जब चाहोगे कर लेंगे हम,अपने वतन की रवानियां

3– हमसे फना न हुआ गया,फुरमान पर न चला गया
कर लेते हैं फिर भी कबूल,ना देखते कुरबानियां

4– तेरे इश्क का हो दायरा,सिमटा रहे तन मन मेरा
है अजब सरूर भरा हुआ,तेरे इश्क की ये निशानियां